

# Trilogy

Trident Group of Institutions | 2024



**CREATIVITY &  
INNOVATION**

# **EDITORIAL BOARD**

## **CHIEF EDITOR**

Dr. D.N.Pattanayak

(Principal, Trident Academy of Technology)

## **EDITORS**

**Dr. Dipti Mayee Sahoo**

(Associate Professor, Department of Business Administration )

**Dr. Sidharth S Mohapatra**

(Associate Professor, Department of English)

**Dr. Namita Mohanty**

(Assistant Professor, Department of English )

**Dr. Rahul Ranjan**

(Assistant Professor, Department of Computer Science and Engineering)

**Dr. Manas Ranjan Senapati**

(Professor , Department of Chemistry )

**Dr. Biswaranjan Nayak**

(Assistant Professor, Department of Computer Science and Engineering)

# CONTENT

## GROUP - A (English section)

### POEMS

1. IN A WORLD OF SUNSHINE	01
Debasis Panigrahi, B.Tech (CSIT)	
2. A TALE DIVINE	02
Shweta Mishra M.Sc (Biotech)	
3. LIFE	03
Chiranjib Ray. M.Sc (Biotech)	
4. A SUBLIME BOND	04
Tapaswini Mishra, B.Sc (Biotech)	
5. MY PAW FRIEND JIMMY	05
Muskan Dash (CSE A)	
6. I WISH I WERE A CLOUD	06
Shradhanjali Samal, B.Tech (CST )	
7. EXISTENCE	07
Shreeyasee Routray, B.Tech (ETC 1st Year)	

### SHORT STORIES

9. The Llittle Boy	08
Pratyush Nayak (CST)	
10. Breaking the Silence	09
Navigating Mental Health Challenges in College Life-Rohan (BBA)	
11. Exploring the Journey From Curiosity to World's Youngest Kaggle Dataset Grandmaster & 3X Master	10
Soumendra Prasad Mohanty, B.Tech CSE (AIML 4th Year)	
12. Exam Days In Hostel	12
Rudra Dev ,B.Tech (CSE)	
13. The Canvas Of Dreams	13
Dibya Smruti Swain (BCA 1st Semester)	
14. The Journey of Success	14
Asutosh Sharma B.Tech (CSE, 6 <sup>th</sup> Semester)	

**GROUP - B (Hindi Section)**  
**POEMS**

- |    |   |    |
|----|---|----|
| 1. | बोझ न बने बुढ़ापा   Pushpam Pallavi ,B.Tech, CS (AIML 2nd Year) | 16 |
| 2. | तुम स्वयं को श्रेष्ठ बताते हो   Arundhati Pandey CST A 3rd Year | 18 |
| 3. | प्यारी माँ   Adyasa Sahoo CST A                                 | 19 |
| 4. | पिता   Akshay Agarwal (CSE A)                                   | 20 |
| 5. | भारत की अनोखी उपलब्धियां   Amit Kumar CSE                       | 21 |

**SHORT STORIES**

- |    |  |    |
|----|--|----|
| 1. | हमारा दोस्त -पर्यावरण   Nistha Kumari (CSE B)        | 23 |
| 2. | एक पेड़ और उसकी जिंदगी   Sipra Mahato CSE B 3rd year | 24 |
| 3. | बुढ़ापे   Sanket Pradhan CSE(B)                      | 25 |

**GROUP - C (Odia Section)**

**POEMS**

- |     |  |    |
|-----|--|----|
| 1.  | ମା କୁ କଣ କେବେ ଛୁଲି ଛୁଣ୍ଟିଥିଲା!   Dr. Biswaranjan Nayak, CS | 28 |
| 2.  | ସର୍ବଂସହା ନାରୀ  Manasweta Mohapatra, (MCA)                  | 29 |
| 3.  | ସ୍ଵପ୍ନ ବିଶ୍ଵ   Pratik Kumar Jena , B.Tech ,CS( AIML)       | 30 |
| 4.  | ରାମ ନଗରୀ (ଅଯୋଧ୍ୟା) Suryakanti Sahu (BBA 6 th SEM)          | 31 |
| 5.  | ମିଛରେ ମିଛ   Nitish Kumar Guin (CST A 1st SEM)              | 32 |
| 6.  | ଆମ ଚିଏସିଟି   Swapnarani Rout (BBA 1st Year)                | 32 |
| 7.  | ସୁଖଦ ଅଭିମତ   Auroshreeta Mohapatra (CSE A 1st Year)        | 33 |
| 8.  | ଶ୍ରେଷ୍ଠ ପ୍ରାଣୀ   Adyasha Samantaray (CSIT 1st Year)        | 34 |
| 9.  | ନିଃସଙ୍ଗତାର ସାଥ୍   Harapriya Sahoo (CS IT 2nd Year)         | 35 |
| 10. | ମୁଁ ଭଗ୍ନାଂଶୁ ଚିଏ   Rajalakshmi Tripathy ( ETC )            | 36 |

**SHORT STORIES**

- |    |   |    |
|----|---|----|
| 1. | ଏକାଗ୍ରତାର ମୂଳ୍ୟ   Jaganath Tripathy (CST)                 | 37 |
| 2. | ସଂକଟର ସାମ୍ବା   Swayam Sahoo (CST) -B- 1st Year            | 38 |
| 3. | ବାଲିଯାତ୍ରା - କଟକ ର ପରିଚୟ   Sai Smita Lenka (MBA) 2nd Year | 39 |
| 4. | ମୋ ସ୍ଵପ୍ନ ଭାରତ   Adarsha Kumar Samal (MBA) 2nd Year       | 40 |

# हिन्दी विभाग

## बोझ न बने बुढ़ापा

आज बच्चों की ज़िद पर उन्हें गिरगांव चौपाटी ले गई. वहाँ श्री पंडित से मुलाकात हुई, जो दस वर्ष पूर्व हमारी ही सोसायटी में रहते थे. रोबदार चेहरा, उत्साही मुस्कान. बच्चों के साथ बैठकर रेत के घर बना रहे थे. उनके साथ समुद्र की लहरों में भीग रहे थे. उम्र होगी पचहत्तर के क़रीब.

सुखी जीवन के पहलू खुलते-खुलते जीवन के उतार-चढ़ाव भी उनकी आंखों से, बातों से परिलक्षित हो रहे थे. छह साल पहले पत्नी चल बसीं. लड़के-लड़कियां सुस्थिर, विवाहित, उच्च पद पर और फिर आर्थिक सघनता. सब कुछ ऐसा कि नज़र लग जाए. फिर भी अकेलापन आदमी को काटने को दौड़ता है, परन्तु इसका एहसास हो, इसके पहले ही एक सुन्दर से आश्रम (वृद्धाश्रम) में प्रवेश ले लिया और जीवन संध्या जैसे महक उठी.

बच्चों ने बहुत विरोध किया, “पापा, ये क्या पागलपन है? घर में कोई तकलीफ है क्या? हमसे कोई गलती हुई है क्या? फिर यह अलगाव क्यूँ? यह वृद्धाश्रम क्यों?” पंडित बोले, “बेटे, यह

अलगाव इसलिए कि जब तक मैं हूँ थोड़ा अंतर रहे, यह ठीक है. तुम मुझे रखते तो यह वृद्धाश्रम होता, मैं यहाँ आया हूँ, तो मेरे लिए ये वानप्रस्थ आश्रम है. मैं अभी बूढ़ा कहाँ हुआ हूँ. अभी मुझे शेक्सपीयर पढ़ना है. प्रेमचंद और महादेवी वर्मा की कहानियों का मर्म जानना है.

और भी बहुत कुछ करना है, जो मन में है... मुझे फिर बंधन में मत बांधो.”

और यदि कहें तो वो एक फ़ोन की दूरी पर हैं या फिर उनके लिए मैं इस दुनिया में हूँ ही नहीं. यह सब बताते-बताते वे हमें नारियलपानीवाले के पास ले आए. छोटे बच्चे जैसे उत्साह में बोले,

“भैया, मलाई निकाल के दो ना.”

नवजीवन का उत्साह जैसे उनके अंग-अंग में भरा था. इन किया हुआ चेक का रंगीन शर्ट, ब्राउन जीन्स की महंगी ब्रांडेड पैंट, सिर पर कैप. इस उम्र में भी यह सलीका, पर इन सबसे सुन्दर था उनका जीवन के प्रति उत्साह. मैं टकटकी लगाकर जैसे देखती रह गई. यहाँ तो कहीं भी निराशा का 'न' और बुढ़ापे का 'ब' नहीं था. था तो सिर्फ ताज़े फूलों जैसे खिले जीवन की ओर देखने का दृष्टिकोण. मैं बहुत प्रभावित हुई. उनका पता मांगा तो बोले, “यदि दे भी दूँ तो आज की पीढ़ी के पास समय कहाँ है. दो दिन तुम्हारे पर्स में चिट पड़ी रहेगी और तीसरे दिन तुम फेंक दोगी. इसलिए ज़्यादा सोचो मत. यदि क़िस्मत में रहा तो फिर मिलेंगे और यदि नहीं रहा तो पता देकर भी क्या उपयोग?”

और वह आकृति दूर-दूर जाकर धूसर होती चली गई.

श्री पंडित से मिलने के बाद आज बार-बार आंखों के आगे पांडे चाचाजी का उदास खोया-

खोया चेहरा नज़र आ रहा था. सच, दोनों में कितना अंतर था. चाचाजी तो बेचारे मशीन बनकर रह गये थे. इस उम्र में भी सुबह उठकर पोते को स्कूल बस के लिए छोड़ना, दूध, तरकारी और अन्य सामान लाना, बिल भरना... न जाने ऐसे कितने ही काम उन पर थोपे गए थे. रिटायर्ड की तरक्ती जो लगी थी उन पर. कामों की फेरहिस्त हनुमान की पूँछ की तरह दिनोंदिन बढ़ती जाती थी. परेशान हो गए थे. संघर्षों और पैसों की कमी से उनके कंधे पचासवाँ वसंत पार करते-करते ही झुक गये थे. एक तरह की गूँगी लाचारी आ गई थी. बस तबसे बुढ़ापे का डरावना सफेद भूत उन्हें खूब डराता था. "तुम मुझे रखते तो यह वृद्धाश्रम होता, मैं यहाँ आया हूँ तो मेरे लिए ये वानप्रस्थ आश्रम है. मैं अभी बूढ़ा कहाँ हुआ हूँ. अभी मुझे शोकसपीयर पढ़ना है. प्रेमचंद और महादेवी वर्मा की कहानियों का मर्म जानना है. और भी बहुत कुछ करना है, जो मन में है..."

Pushpam Pallavi  
B.Tech, CS (AIML 2nd Year)

# तुम स्वयं को श्रेष्ठ बताते हो

ना नर में कोई राम बचा, नारी में ना कोई सीता है  
ना धरा बचाने के खातिर, विष कोई शंकर पीता है  
ना श्री कृष्ण सा धर्म-अधर्म का किसी में ज्ञान बचा है  
ना हरिश्चंद्र सा सत्य किसी के अंदर रच-बसा है  
न गौतम बुद्ध सा धैर्य बच्चा न नानक जी स परम त्याग  
बस नाच रही है नर के भीतर प्रतिशोध की कुटिल आग  
फिर बोलो कि उस स्वर्णिम युग का क्या अंश बाकी तुम में  
कि किसी धूनी में रमे होकर तुम फूले नहीं समाते हो  
तुम स्वयं को श्रेष्ठ बताते हो

तुम भीष्म पितामह की सेवा अपने ही जीद पर जोड़ रहे हो  
तुम अपने धर्म को श्रेष्ठ बता दुर्योधन के साथ खड़े रहो  
तुम शकुनि के षडयंत्रो से घृणित रहे, तुम दंग रहे  
एक दुर्योधन फिर सत्ता के लिए युद्ध में जाता है  
कुछ धर्मधरो के अंदर फिर थोड़ा धर्म जागता है

फिर धर्म की चिलम में नफ़रत की चिंगारी से आग लगा कर चरस का डुना फूंक-फूंक मतवाले  
होते जाते हैं

तुम स्वयं को श्रेष्ठ बताते हो

Arundhati Pandey  
CST A 3rd Year

## प्यारी माँ

सबसे प्यारी प्यारी सबसे न्यारी  
कितनी भोली भाली माँ  
तप्ती दोपहर मैं जैसा  
शीतल छाया बाली माँ  
मुझको देख देख मुस्कति  
मेरे आंसू साह न पाती  
मेरे सुख के बदले अपने  
सुख की बलि चढ़ती माँ  
इसको ममता कितनी पावन  
मीठी बोली है मनभावन  
इश्की डरती पर माता बनकर  
इस कृपा बरसाती माँ

Adyasa Sahoo  
CSTA



## पिता

मेरा साहस मेरा सम्मान है पिता  
मेरी ताकत मेरी पहचान है पिता  
शायद रब ने भेजा फल ये अच्छे कर्मों का  
उसकी रहमत उसका है वरदान पिता  
कभी हँसी और खुशी का मेला है पिता  
कभी कितना अकेला और तन्हा है पिता  
माँ तो कह देती हैं अपने दिल की बात  
सब कुछ समेट के आसमान सा फेला है पिता  
मुझे रख दिया छाँव में खुद जलते रहे धूप में  
मैंने देखा है ऐसा एक फरिस्ता अपने पिता के रूप में  
पिता के होने से घर में कोई गम नहीं  
अगर माँ अतुलनीय है तो पिता भी काम नहीं  
भूखा नहीं सोया कभी मजबूर बनकर  
अपने सपने बेचकर खिला पिता ने मजदूर बनकर  
मैं घर से निकला तो पता चला कि मेरा कितना नाम है  
क्योंकि मेरे नाम के आगे मेरे पिता का नाम है  
बेनाम राही जिसका शक्सियात तो मेरा  
हम शरक्स ने हर किरदार बखूब निभाया है  
मुझे नहीं पता ऊपर बाले ने मेरे तकदीर में क्या लिखा है  
अगर पिता का प्यार नहीं लिखा तो कुछ नहीं लिखा है

Manisha Sharma  
MCA

## भारत की अनोखी उपलब्धियां

भारत दुनिया भर में अपनी संस्कृति, पाक शैली और विविधता के लिए जाना जाता है। इस देश ने कई महान् हस्तियों को जन्म दिया। इसके साथ ही भारत ने दुनिया को कई ऐसी चीज़ें दी जिससे लोगों का जीवन सुगम बना।

### 1- योग

आज की तारीख में दुनिया भर में योग काफ़ी लोकप्रिय है। संयुक्त राष्ट्र ने 21 जून को विश्व योग दिवस घोषित किया है। आप किसी भी अच्छे जिम में जाइए तो वहाँ योग विशेषज्ञ मिल जाएंगे। योग के बारे कहा जाता है कि यह भारतीय इतिहास के पूर्व-वैदिक काल से ही प्रचलन में था। इसकी जड़ें हिन्दू, बौद्ध और जैन संस्कृति से हैं। अब खुद को फिट रखने के लिए दुनिया भर में योग प्रचलन में आ गया है। पश्चिम में योग को स्वामी विवेकानंद (1863-1903) ने फैलाया था।

### 2- रेडियो प्रसारण

सामान्य तौर पर नोबेल पुरस्कार विजेता इंजीनियर और खोजकर्ता गुलइलमो मार्कोनी को रेडियो प्रसारण का जनक माना जाता है। हालांकि भारतीय वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बोस ने इससे पहले मिलीमीटर रेंज रेडियो तरंग माइक्रोवेव्स का इस्तमल बारूद को सुलगाने और घंटी बजाने में किया था। इसके चार साल बाद लोहा-पारा-लोहा कोहिरर टेलिफोन डिटेक्टर के तौर पर आया और यह वायरलेस रेडियो प्रसारण के अधिकार का अग्रदृत बना।

### 3- फाइबर ऑप्टिक्स

क्या आप ऐसी दुनिया की कल्पना कर सकते हैं जहाँ आप अपने दोस्त की बिल्ली का प्यारा वीडियो या अपने ईमेल के इनबॉक्स में मर्दानी बढ़ाने वाले उत्पादों के लेटेस्ट ऑफर न देख सकें? ज़ाहिर है जब इंटरनेट की दुनिया नहीं थी तो ये सारी चीज़ें संभव नहीं थी। लेकिन फाइबर ऑप्टिक्स के आने बाद, वेब, ट्रांस पोर्ट, टेलिफोन संचार और मेडिकल की दुनिया में क्रातिकारी परिवर्तन आए।

### 4- सांप-सीढ़ी

आज के आधुनिक कंप्यूटर गेम्स को भारत के सांपसीढ़ी खेल से प्रेरित कहा जाता है। भारत का यह खेल इंग्लैंड में काफ़ी लोकप्रिय हुआ। इस खेल की उत्पत्ति का संबंध हिन्दू बच्चों में मूल्यों को सिखाने के तौर पर देखा जाता है। यहाँ सीढ़ियों को सदाचार और सांपको शैतान के रूप में देखा जाता है।

### 5- यूएसबी पोर्ट

यूएसबी यानी यूनिवर्सल सीरियल बस पोर्ट के अविष्कार से हमें इलेक्ट्रॉनिक डिवाइसों से जड़े में मदद मिली। इससे उस शरख्स की भी ज़िदगी बदल गई जिसने इसे बनाने में मदद की। उस शरख्स का

नाम अजय भट्ट हैं। 1990 के दशक में भट्ट और उनकी टीम ने डिवाइस पर जब काम शुरू किया तो उस दशक के आखिर तक कंप्यटर कनेक्टिविटी के लिए यह सबसे अहम फीचर बन गया था।

## 6-फ्लशटॉयलेट्स

पुरातात्त्विक सबूतों से साफ़ पता चलता है कि फ्लशिंग शौचालय सिंधु घाटी सभ्यता में मौजूद था। कांस्य युगीन सभ्यता का यह इलाक़ा बाद में कश्मीर बना। यहां जलाशय और सीवेज काफ़ी व्यवस्थित क्रम में थे।

## 7-शैम्पू

शैम्पू से बाल धोने के बाद भला कौन अच्छा महसूस नहीं करता होगा। खुशबू चमक और आत्मविश्वास को आसानी से महसूस किया जा सकता है। बिना शैम्पू के नहाना ऐसा लगता है मानो दोपहर बाद की चाय बिना बिस्कुट के हो। ऐसा लगता है कि बिना शैम्पू के कैसे नहाया जा सकता है। भारत में 15वीं शताब्दी में कई पौधों की पत्तियों और फलों के बींजों से शैम्पू बनाया जाता था। ब्रिटिश उपनिवेश काल में व्यापारियों ने यरोप में इस शैम्पू को पहुंचाया।

Amit Kumar  
CSE

## हमारा दोस्त - पर्यावरण

हम जिस पर्यावरण में रहते हैं उसके लिए जिम्मेदार होने के महत्व को ध्यान में रखते हुए सस्टेनेबल डेवलपमेंट विकास की दिशा में काम कर रहा है। सस्टेनेबल डेवलपमेंट का मूल विचार कल की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए आज के लिए काम करना है। सस्टेनेबल डेवलपमेंट के कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।

**पवन ऊर्जा** – पवन ऊर्जा आसानी से उपलब्ध होने वाला संसाधन है। यह एक मुफ्त संसाधन भी है। यह ऊर्जा का अक्षय स्रोत है और पवन की शक्ति का उपयोग करके जो ऊर्जा उत्पन्न की जा सकती है वह सभी के लिए फायदेमंद होगी। पवन चक्रियां ऊर्जा का प्रोडक्शन कर सकती हैं जिसका उपयोग हमारे लाभ के लिए किया जा सकता है। यह ग्रिड बिजली की लागत को कम करने का एक सहायक स्रोत हो सकता है और सस्टेनेबल डेवलपमेंट का एक अच्छा उदाहरण है।

**सौर ऊर्जा** – सौर ऊर्जा, ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण स्रोत है जो आसानी से उपलब्ध है और इसकी कोई सीमा नहीं है। सौर ऊर्जा का उपयोग कई चीजों को बदलने और करने के लिए किया जा रहा है जो पहले ऊर्जा के गैर-नवीकरणीय स्रोतों का उपयोग करके किए जा रहे थे। सोलर वॉटर हीटर इसका एक अच्छा उदाहरण हैं। यह एक ही समय में लागत प्रभावी और टिकाऊ है।

**क्रॉप रोटेशन** – बागवानी भूमि की वृद्धि की संभावना को बढ़ाने के लिए फसल चक्र एक आदर्श और टिकाऊ तरीका है। यह किसी भी रसायन से मुक्त है और मिट्टी में रोग की संभावना को कम करता है। सस्टेनेबल डेवलपमेंट का यह रूप वाणिज्यिक किसानों और घरेलू माली दोनों के लिए फायदेमंद है।

**कुशल जल फिक्स्चर** – हमारे शौचालयों में हाथ और सिर की बौछारों की स्थापना जो कुशल हैं और पानी बर्बाद या रिसाव नहीं करते हैं, पानी के संरक्षण की एक विधि है। पानी हमारे लिए जरूरी है और हर बूंद का संरक्षण जरूरी है। शॉवर के नीचे कम समय बिताना भी सस्टेनेबल डेवलपमेंट और पानी के संरक्षण का एक तरीका है।

**सस्टेनेबल फॉरेस्ट्री** – यह सस्टेनेबल डेवलपमेंट का एक अद्भुत तरीका है जहां कारखानों द्वारा काटे जाने वाले लकड़ी के पेड़ों को दूसरे पेड़ से बदल दिया जाता है। जो काटा गया उसके स्थान पर एक नया पेड़ लगाया जाता है। इस तरह, मिट्टी का कटाव रोका जाता है और हमें एक बेहतर, हरित भविष्य की आशा है।

## एक पेड़ और उसकी जिंदगी

एक पेड़ के दो पत्ते चल पड़े थे हलके हलके एक तो वही गिर गई दुसरी हवाएं चूरा के ले गई देख के कोयले यह बोली वो सहेली गम ना कर तु सबको एक दिन है मिटना वो जो भी जहां भी ॥ जल्दी भी क्या है अभी तो आई हो, जल्दी भी क्या है फिर मुझे यूं तन्हा कर जाने की बेदर्दी भी क्या है । समेट लेने दो जीने के चंद लम्बो को इसे भी छीन लेने की खुद गरजी भी क्या है । अभी तो आई हो, जल्दी भी क्या है ।

माना ,तोहोमत लगाएगा जमाना  
श्रृंगार समझ के ओढ़ लेना तुम  
हर पल साथ निभाएंगे तुम्हारा  
मेरा भी नाम खुशी से जोड़ लेना तुम

रुक भी जाओ जाना ज़रूरी है क्या , मोहब्बत से बढ़ कर भी कोई मजबूरी है क्या । सितम धायेगा जमाना मिल कर सह लेंगे हम, तुम सिर्फ मेरी हो ये सब से कह देंगे हम । चलो ना मिलते हैं कहीं मिल कर ढेर सारी बातें करेंगे, दिन काम पड़ेगा हम ना सारी रातें करेंगे । देखेगा तो जलेगा जमाना, हम मिलेंगे छिप छिप कर । कहना मत हम सुन लेंगे, हम ना निगाहों से सिल सिला करेंगे ।

तुम कहना मुझसे तुम्हें क्या क्या पसंद है, मैं कहूँगा मैं क्यों कायल हूँ तुम पर । तुम फेर लेना नजरे जब मैं निहारूंगा उन्हें बड़े देर तक , क्यों कि मैं कायल हूँ तुम पर । चलो ना ऐसे छोटे छोटे लम्बे जोड़ कर एक जिंदगी बनाने की कोशिश करते हैं, चलो ना हम साथ मिल कर इस दुनिया को प्यार का परिभाषा समझते हैं ।

Sipra Mahato  
CSE B 3rd year

## बुढ़ापे

उस दिन गाँधी पार्क की बेंच पर मुझे बुढ़ापा मिला। उसके चेहरे पर पड़ी झुर्रियाँ अब मुरझाने लगी थीं, चश्मे की डंडी टूटी हुई थी, बत्तीसी बदलवाने का समय नजदीक था, कुछ याद भी अब कहाँ रहता था, एक दिन तो खाना खाना ही भूल गया। फिर भी ये सबसे प्यार से मिलता, लेकिन इसके साथ लोगों को शिथिलता और बीमारी नाम की इसकी दो सालियों से भी दो चार होना पड़ता, इसलिए कोई इसे पसंद न करता था।

बुढ़ापे ने मुझे देखा तो बुलाया। मैं उसके सबसे प्रियजनों में था क्यूंकि मैं उसके अनुभव का लाभार्थी था। मुझे बुलाकर हालचाल लिया और दो घड़ी की मीठी बातें, अनगिनत आशीर्वाद के साथ कुछ पते की सीख और समझदारी की कड़वी दवा दे वो चला गया। यूँ था तो कुरुरूप लेकिन भली सी बातें करता था।

गाँधी पार्क से बाहर निकल, गाँधी चौराहे पर मुझे एक लड़की ने रोक लिया। अपना परिचय उसने जवानी नाम से दिया। रोकने की गरज पूछने पर कहा कि कोई खास बात नहीं है, किसी काम से जाने वालों को अपने मतलब से उलझाकर रोकना और ध्यान भंग करने में मुझे मजा आता है। कच्ची उम्र के लोगों को पथभ्रष्ट करना मुझे खुश कर जाता है, यूँ तुम भी मेरी ही तरह जवान और हसीं हो तो मेरा एक काम कर दो ना। मुझे गाँधी रोड की पिज्जा वाली दुकान से एक मीडियम पिज्जा दिला दो ना।

उसकी इस नाकाबिल-ए-बर्दाश्त बात पर मैंने उसे किसी और का हाथ पकड़ने की सलाह दी और वहाँ से निकलने लगा। थोड़ी देर बाद, वो लड़की किसी और लड़के के साथ उस पिज्जा वाली दुकान में 'एक्स्ट्रा चीज विद कोक' का आर्डर दे खुश हो रही थी। उस लड़के को नौकरी के लिए इंटरव्यू देने जाना था, लेकिन यही तो उसका काम था, एक और नवयुवक बेरोजगार होने की राह पर बढ़ चुका था।

दस लाख के पैकेज की योग्यता, अब सरकारी 'गाँधी बेरोजगारी सम्मान योजना' के तहत हजार रूपए का वजीफा पाने की जुगत भिड़ाने लगी थी। मुफ्त की बिजली और पानी का वादा उनसे था ही, अब बिना कुछ किये एक हजार की गाँधी योजना के पैसे के सपने बुने जाने लगे थे, साथ में कोई हमसफर भी यूँ ही मिल गया था।

दिन गुजरे, साल गुजरे, 'गाँधी बेरोजगार सम्मान योजना' का वजीफाधारी अब युवा न था, सरकार बदली और वजीफा मिलना बंद। अब हमसफर भी रुखसत हो चुकी थीं और वजीफे के साथ लाखों

के पैकेज वाली नौकरी की उम्मीद भी। एक और नवयुवक अपनी मूर्खता के हाथों, ना, न कह पाने की लाचारी में अपना भविष्य धूल धुसरित कर चुका था। गाँधी योजना के वजीफे की जगह अब 'गाँधी अन्न योजना' के तहत राशन मिलने लगा, काम फिर चल निकला। कुछ दिन बाद चुनाव हुए, चुनाव में शामिल दोनों प्रतिस्पर्धी 'जवानी' और 'बुढ़ापा' थे। 'जवानी' के साथ लोगों का हुजूम था, सो पैसे के इंतजाम में कोई कसर न रखी गई। लोगों को तृप्त होने तक सोमरस की निर्बाध सुविधा दी गई। 'जवानी' जीतती दिख रही थी।

वहीं 'बुढ़ापा' न दिखता अच्छा था, न अपनी बात कह पा रहा था। उसके चुनाव प्रचार में गिनती के लोग शामिल थे, जिनमें अनुभव, प्रेम, अपनत्व, समझदारी और सामाजिक सौहार्द शामिल थे। इन्हीं चंद लोगों के साथ, बुढ़ापे को 'विकास' का भी साथ था क्यूंकि उसके पास 'दृष्टिकोण' भी था। कुल मिलाकर आठ-दस लोगों का सहयोग लेकर बुढ़ापा क्या ही कर लेता, सो हार गया।

'जवानी' ने सरकारी खजाने से सब कुछ मुफ्त कर दिया था, शासन पंगु हो चुका था, 'विकास' अपने अभिन्न मिलों दृष्टिकोण एवं अनुभव के साथ था जिन्होंने बुढ़ापे का साथ छोड़ने से मना कर दिया, और अंततः वो समाज हार गया। नशे और आतंक ने उससे दोस्ती जो कर ली थी।

कहने को ये एक काल्पनिक कथा है, लेकिन कहीं न कहीं यही हमारे समाज की सच्चाई भी है। बुजुर्गों को सम्मान न देने से, बच्चों में संस्कारों की कमी रहती है, जिससे एक कच्ची उम्र में उन्हें गलत राह पर मोड़ दिया जाता है। समाज में नफरत, व्यभिचार और अव्यवस्था फैलने लगती है।

एक समाज के तौर पर, सेवानिवृत्त लोगों के आशीर्वाद की, बुजुर्गों के अनुभव की, उनकी समस्याओं से निकलने की कला की, सहिष्णुता की, युवा वर्ग को महती आवश्यकता है। इस सामंजस्य के अभाव में देश के सबसे खुशहाल कृषि-प्रधान राज्य में युवाओं की चिंतनीय स्थिति को हम सबने देखा ही है। एक बड़ी राजनीतिक पार्टी के अध्यक्ष ने नशे की समस्या का वर्णन खुले मंच से कर दिया था। फिल्में बनाई गईं, गोया सारा राज्य नशेड़ी हो।। हमें संभलने के लिए अनुभवी हाथों की जरूरत है। यही जरूरत आपको वो बनाती है, जो आप है – “विशिष्ट, अनुपम और संजीदगी की नायाब ईश्वरीय कृपा” यानि हमारे बुजुर्ग। आपके गुणों, तप और साहस के साथ समाज को बांध लेने की क्षमताओं का ये समाज सदा सर्वदा ऋणी रहेगा।

Sanket Pradhan  
CSE(B)





**Trident Group of Institutions**  
Plot No.F2/A, Chandaka Industrial Estate,  
Infocity Area, Chandrasekharpur,  
Bhubaneswar-751 024, Odisha  
Email : [info@trident.ac.in](mailto:info@trident.ac.in),